भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वर्ष-17, अंक- 4, 5 & 6 | वि. स. 2078 | युगाब्द 5123 | जून, जुलाई, अगस्त-2021 | डिजिटल संस्करण

मार्गदर्शक :

- डॉ. कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- श्री ब्रह्मदेवशर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबंध न्यासी

सम्पादक :

- डॉ शिवभूषण त्रिपाठी

सह-सम्पादक :

- राजेश

मुद्रक एवं प्रकाशक :

- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबंधक :

- विजय अग्रवाल

केन्द्रीय कार्यालय :

भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निराला नगर,
लखनऊ, उ.प्र.-226020
दूरभाष: 0522-4001837,
0522-2789406
मो: 9450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :

E-mail: bdsnyas.dl@gmail.com
मो : 9811068375

आलोक: प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संरक्षक सहयोग राशि : रु 5000/-

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/-

जन्म - 28 जून 1547 | निधन-1600 ईसवी

दानवीर भामाशाह

तन-मन-धन परहित सदा, करता है जो दान।
उसकी महिमा सरस्वती, करती नित्य बखान।।
भामाशाह दानी परम, अद्भुत वीर महान।
भामाशाह हम भी बनें, वीर-व्रती बलवान।।

-शिव

सेवा संवाद के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य
आपकी पत्रिका सेवा संवाद अब डिजिटल रूप में प्रकाशित करने का निर्णय न्यास द्वारा किया गया है | आप सभी से अनुरोध है कि डिजिटल संस्करण आपको नियमित मिलता रहे, उसके लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी जल्द से जल्द न्यास के ई-मेल आईडी –bdsnyas.dl@gmail.com पर प्रेषित करें |

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सहकार निवेदन

पिछले 26 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्त्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. सचल चिकित्सा सेवा - रु. 11,000 की मासिक धनराशि का सहयोग करके एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. नेत्र चिकित्सा सेवा - रु. 5000 की धनराशि का सहयोग कर एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर उसे नेत्र ज्योति प्रदान कराना।
3. विकलांग सहायता सेवा - रु. 1,000 से 6,000 तक की राशि दे कर एक विकलांग बन्धु की सहायता में उसके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, बैसाखी, ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)- रु. 10,000 से अधिक की धनराशि का अर्पण करके न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. छात्रवृत्ति- न्यास द्वारा जरूरतमंद छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। कक्षा के अनुसार छात्रवृत्ति इस प्रकार है - प्राथमिक : रु 3000, माध्यमिक (जू.हा.) : रु 5,000, हाईस्कूल : रु 7,000, इण्टरमीडिएट : रु 8000, आई.टी.आई/डिप्लोमा एवं स्नातक : रु 10,000, परास्नातक : रु 12,000, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु : रु 15,000, इंजीनियरिंग : रु 18,000 और मेडिकल : रु 20,000।
6. सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक पत्रिका) - रु. 1,200 की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. सेवा संवाद (मासिक) - रू. 2,000 की आजीवन एवं रु. 5,000 की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. माधव सेवा आश्रम - रु. 5,00,000 का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।
9. विश्राम सदन - दिल्ली - दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु. 21,000 की कमी रहती है जिसके लिए सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक बेड के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
10. अक्षय सेवा - दिल्ली में एम्स एवं दो अन्य अस्पतालों के निकट दोपहर में होने वाले भोजन वितरण के लिए रु. 6,000 (प्रतिदिन/प्रति अस्पताल) की सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक दिनों के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
11. CSR फंड - यदि आपकी फर्म CSR में भी दान करती है तो कृपया न्यास से फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजें कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं :

- चेक व ड्राफ्ट द्वारा जो, **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में **लखनऊ या दिल्ली** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेजें।
- अप्रवासी भारतीय भी दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें।
- दान की राशि आप सीधे न्यास के खाते में भी जमा कर पैन नं., फोन नं. व पते के साथ सूचित कर सकते हैं।
  - बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. 6806100009948 (IFSC : BKID0006806)
  - भारतीय स्टेट बैंक, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. 30448433657 (IFSC : SBIN0003813)
  - बैंक ऑफ इण्डिया, पटपड़गंज, नई दिल्ली - खाता सं. 605810110013350 (IFSC : BKID0006058)

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

अपनी बात

'सेवा संवाद' जून, जुलाई एवं अगस्त 2021 के अंक कतिपय अपरिहार्य कारणों से यथा समय प्रकाशित नहीं हो सके थे, जिसका हमें खेद है। यह अगस्त अंक नए कलेवर में प्रस्तुत है।

मित्रो! हमारे मानव समाज में कुछ ऐसे लोग होते हैं जो स्वयं अपनी अन्त: प्रेरणा से अपने सुख-दु:ख की चिंता न करते हुए अपनों की, अपने समाज तथा राष्ट्र की चिन्ता करते हैं और सदैव अपना तन-मन-धन सब कुछ न्यौछावर करने के लिए उद्यत रहते हैं। परन्तु समाज में अधिकांश लोग ऐसे होते हैं जो सब कुछ होते हुए भी अपने संकुचित स्व की सीमा से आगे देख-सुन अथवा विचार नहीं कर पाते, खुद से पहले अपनों की सुगति गौतमी गीता है- इसका अर्थ नहीं समझ पाते। ऐसे लोग न तो स्वयं कुछ करते हैं और न दूसरों को ही श्रेष्ठ मार्ग पर चलने देते हैं। ये लोग तर्क- कुतर्क कर व्यवधान उपस्थित करते हैं और तात्कालिक फल को ही महत्वपूर्ण समझते हैं। ऐसे ही लोगों को उद्बोधित-जागृत करने के लिए शास्त्र, ग्रन्थ तथा स्वयं के जीवन को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करने वाले सन्त महात्माओं के जीवन की घटनाओं का उल्लेख, उनके कृतकार्य तथा उनके अमृत वचनों का बार-बार स्मरण करने की आवश्यकता होती है ताकि सभी परस्पर देवोभव की भावना में श्रेष्ठ उत्तम आचरण कर सकें तथा **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** एवं **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की संकल्पना को साकार कर सकें।

कुछ इसी तरह के संदर्भों में स्वामीरामतीर्थ ने तालाब और सरिता के बीच हुए विवाद का उल्लेख किया था। एक बार एक तालाब ने नदी से कहा- `ऐ नदी ! तू बड़ी मूर्ख है जो अपना सारा जल और सम्पूर्ण वैभव समुद्र को देती रहती है। तू समुद्र पर अपना ऐश्वर्य मत लुटा। वह अकृतज्ञ है। तेरे सबकुछ लुटा देने के बाद भी उतना ही खारा बना रहेगा जितना आज है। इसलिए अपनी सारी निधियों को अपने ही पास रख।" नदी ने सरोवर की बात पर विचार किया, एक क्षण के लिए उसे लगा कि तालाब में लौकिक बुद्धिमता है, उसका कथन ठीक है, पर दूसरे ही क्षण- **'परोपकाराय सताम् विभूतयः'** यह बात उसके ध्यान में आई और उसने सोचा कि तालाब तो संकुचित स्वार्थ में वैभव संचय करने की बात कर रहा है। कंजूस, कम खर्च तालाब अपना सारा वैभव संचित कर सड़े हुए जल से भरपूर एवं दुर्गन्धयुक्त होकर तीन चार महीने में सूख जायेगा और उसकी सत्ता समाप्त हो जायेगी, पर मुझे तो गतिमान रहना है। फल जो कुछ भी हो उसकी क्या चिंता। इस प्रकार नदी लाखों घड़ों पर घड़े पानी समुद्र में बहाती रही फलतः ताजी और खुश बनी रही। उसके अन्दर के मूल स्त्रोतों को पूर्ण रखने के लिए चुपचाप समुद्र से जल मिलता रहा। कुछ देते रहने के कारण नदी जीवित रही। अति कृपण तालाब सूख गया। दानशील नदी आबाद रही तो फिर हम क्यों न उदार व दानशील बन कर जिएँ। उदारता- दानशीलता की चर्चा/प्रसंगों में दानवीर भामाशाह का नाम सहज ही हमारी जिह्वा पर आ जाता है। इनके सहयोग ने ही महाराणा प्रताप के संघर्ष को एक नई ऊर्जा दी थी।

सेवा, परोपकार, समाज, लोक एवं राष्ट्र कल्याण के कार्यों में आदर्श रूप दानवीर भामाशाह, माता जीजाबाई, रानी लक्ष्मीबाई, श्री ईश्वरचन्द विद्यासागर और महर्षि अरविन्द जैसी महान विभूतियों की चर्चा इस अंक में की गई है जिससे अनुप्राणित होकर हम भी कुछ अच्छा करने के लिए संकल्पबद्ध हों। इसी आशा-आकांक्षा के साथ यह अंक आप को समर्पित है।

- शिव

प्रगति समीक्षा-महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के अन्तर्गत **महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प** उचित दिशा में पग बढ़ाते हुए प्रगति के पथ पर अग्रसर है। पिछले वर्ष से आरंभ हुई हमारी यात्रा अब दूसरे वर्ष में बालिकाओं के नये बैच के लिए उत्साहित है। नये बैच के लिए प्रवेश प्रक्रिया आरंभ हो चुकी है, जिसके लिए विगत 18 अगस्त को अर्जुनगंज, लखनऊ में लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया। उपरोक्त परीक्षा में उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों से बालिकाओं ने भाग लिया। लिखित परीक्षा के परिणाम के आधार पर चयनित बालिकाओं का आगामी 15 सितंबर को इंटरव्यू प्रस्तावित है, पश्चात बालिकाओं के गृह जाकर उनकी आर्थिक पृष्ठभूमि की समीक्षा के उपरान्त इस वर्ष के लिए चयनित बालिकाओं की निर्णायक सूची तैयार होगी। हमारे प्रथम बैच की बालिकाओं की प्रगति संतोषजनक है, जिसका मूल्यांकन हमारी महिला टीम की सदस्यों के द्वारा समय-समय पर होता रहता है। हमारा संस्थान बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लिए कृत-संकल्प है, इसी उद्देश्य से अगस्त माह से बालिकाओं के लिए आनलाइन ही व्यक्तित्व विकास सत्रों की श्रंखला शुरू की गई है। इस श्रंखला के अन्तर्गत माह में दो बार ये सत्र आयोजित होंगे, जिसमें पहले से बताए गए किसी विषय पर प्रत्येक बालिका को 2 मिनट में अपने विचार प्रस्तुत करने होंगे। अंत में कार्यक्रम प्रमुख द्वारा सभी प्रस्तुतियों की समीक्षा की जाएगी, साथ ही जहां भी सुधार की आवश्यकता होगी, उसे इंगित किया जाएगा। इन सत्रों का उद्देश्य बालिकाओं में अभिव्यक्ति की कला का विकास कर उनके आत्मविश्वास को विकसित करना है। इस श्रंखला का पहला सत्र 29 अगस्त को 'आधुनिक भारत में महिलाओं का योगदान एवं महिला शिक्षा' विषय के साथ आयोजित किया गया जो कि बहुत ही उत्साहवर्धक रहा। सभी बालिकाओं ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया और अपनी प्रस्तुतियां दीं। इस तरह के आयोजन से व्यक्तित्व विकास के साथ साथ परस्पर आत्मीयता भी गहन होती है। आगे इसी तरह के अन्य कार्यक्रम भी प्रस्तावित हैं।

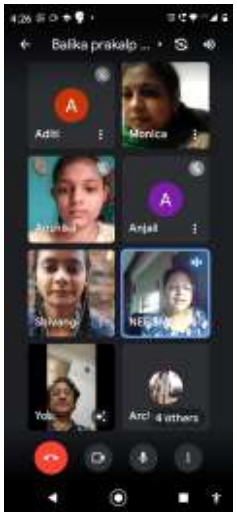

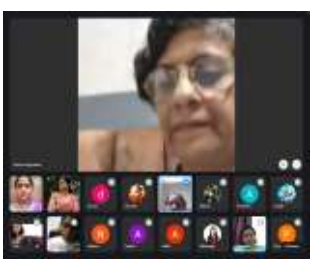

भाऊराव देवरस स्मृति व्याख्यान माला - 28वाँ पुष्प

न्यास के एक वार्षिक उपक्रम **भाऊराव देवरस स्मृति व्याख्यानमाला की 28 वीं माला** का आयोजन **20 जून 2021** को सायं 5.30 बजे ऑनलाइन माध्यम से हुआ | मुख्य वक्ता के नाते से परम सौभाग्य से वात्सल्य ग्राम की संस्थापिका **दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा जी** उपस्थित रहीं | विषय था : **सेवा – भारतीय संस्कृति** | कार्यक्रम का प्रसारण यू-ट्यूब के माध्यम से किया गया जिसे पूरे भारत में सैकड़ों लोगों द्वारा देखा गया और अनेकों ने यू-ट्यूब पर ही कार्यक्रम के विषय में अपने विचार भी रखे |

कार्यक्रम के आरम्भ में न्यास के विभिन्न कार्यों को दर्शाने वाली एक विडिओ को दिखाया गया | उसके बाद न्यास के सह सचिव श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल जी ने दीदी माँ का परिचय करवाया व स्वागत किया | तत्पश्चात दीदी माँ ने धाराप्रवाह बोलते हुए विषय की प्रस्तुति की जो सभी देखने सुनने वालों को आत्मविभोर कर गई | उनके द्वारा रखे गए विषय का सार निम्न है |

उन्होंने एक उदाहरण से अपना विषय प्रारम्भ किया कि चिड़िया अपने कमजोर बच्चे को नहीं संभालती लेकिन माँ अपने कमजोर बच्चे की अधिक चिंता करती है और यही मानवीय भावना है जो हमें चिंतन के उदात्त शिखर पर पहुंचाती है | यही चेतना का उच्च शिखर है और इसी में से सेवा की भावना जागृत होती है | मनुष्य का गौरव ही बांटने में है और जो बांटा जाता है उसे ही प्रसाद कहते हैं | जैसे हौदी का जल कुछ समय बाद सूख जाता है और सड़ जाता है परन्तु कुएँ से जितना भी जल निकाला जाए वह हमेशा ताजा जल ही देता है और ना ही वह सूखता है, उसी प्रकार सेवाभावी मनुष्य का मन भी पानी के हौज की तरह न होकर कुएँ की तरह होता है – वह जितना भी दे, कम नहीं पड़ता | उसके चित्त का प्रेम कभी कम नहीं पड़ता | देने का अर्थ केवल दौलत देना ही नहीं है, कभी-कभी प्यार बांटना भी लेने वाले के लिए धन से अधिक मूल्यवान हो जाता है |

सेवा की प्रेरणा प्रत्यक्ष सेवादारों से मिलती है । इसमें मन की तृप्ति तो है परन्तु ग्लैमर नहीं है । अर्पित करने से अधिक महत्त्वपूर्ण है - समर्पण यानि कुछ नहीं पाना केवल देना, यही सच्चा यज्ञ है। साधक की भान्ति जीवन, लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता यही आवश्यक है सेवा के लिए। सेवा माध्यम है। प्यासा कुएँ के पास आए तो वह सेवा नहीं, कुएँ का प्यासे के पास जाना ही सेवा है। अहम् को वयम् में परिवर्तित करना, समस्त प्राणियों को सुखी करने की साधना में तन्मय हो जाना ही सच्ची सेवा है।

केवल मन में सोचने से नहीं करने से ही मनुष्य देवत्व के शिखर पर पहुंच सकता है। बड़ा सुख व आनंद केवल धन सम्पदा को देने में नहीं, आन्तरिक समृद्धि को देने से मिलता है और यह समृद्धि बाँटने योग्य बनने के लिए उसे पाना भी पड़ता है। इसके लिए प्रखरता आवश्यक है, तेज और मन में आग भी चाहिए। ऐसे ही थे मा० भाऊराव देवरस एवं अन्य महापुरुष जिनके पास यह सब कुछ था जिस कारण वे बाँटने में सफल हुए।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास भी इसी प्रकार के सच्ची सेवा के कार्य में बिना किसी इच्छा के लगा है। संचितों, दलितों की सेवा के कार्य को न्यास की कार्यकारिणी के सभी कार्यकर्ता पूर्ण करने में लगे हैं।

अन्त में न्यास के न्यासी श्री संजय गर्ग जी ने दीदी माँ के साथ-साथ उनके साथियों का भी धन्यवाद किया जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में पूरा सहयोग दिया।

दानवीर भामाशाह

28 जून 1547 1600

भामाशाह बाल्यकाल से मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप के मित्र,सहयोगी और विश्वासपात्र सलाहकार थे। अपरिग्रह को जीवन का मूलमन्त्र मानकर संग्रहण की प्रवृत्ति से दूर रहने की चेतना जगाने में आप सदैव अग्रणी रहे। आप के मन में मातृ-भूमि के प्रति अगाध प्रेम था।

भामाशाह का जन्म 28 जून 1547 को राजस्थान के मेवाड़ राज्य में वर्तमान पाली जिले के सादड़ी गांव में ओसवाल जैन परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम श्री भारमल था जो रणथम्भौर के किलेदार थे।

भामाशाह का निष्ठापूर्ण सहयोग महाराणा प्रताप के जीवन में महत्वपूर्ण और निर्णायक साबित हुआ। इन्होंने मातृ-भूमि की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप का सर्वस्व होम हो जाने के बाद भी उनके लक्ष्य को सर्वोपरि मानते हुए अपनी सम्पूर्ण धन-संपदा अर्पित कर दी। यह सहयोग उन्होंने तब दिया जब हल्दी घाटी के युद्ध के पश्चात् महाराणा प्रताप अपना अस्तित्व बनाए रखने के प्रयास में निराश होकर परिवार सहित पहाड़ियों में छिपते भटक रहे थे। महाराणा प्रताप के लिए उन्होंने अपनी निजी सम्पत्ति में इतना धन दान दिया था कि जिससे 25000 सैनिकों का बारह वर्ष तक निर्वाह हो सकता था। प्राप्त सहयोग से महाराणा प्रताप में नया उत्साह उत्पन्न हुआ। उन्होंने पुनः सैन्य शक्ति संगठित कर मुगल शासकों को पराजित किया और फिर से मेवाड़ का राज्य प्राप्त किया। मेवाड़ की अस्मिता की रक्षा के लिए इन्होंने दिल्ली की गद्दी का प्रलोभन भी ठुकरा दिया। महाराणा प्रताप को दी गई उनकी हर सम्भव सहायता ने मेवाड़ के आत्म सम्मान एवं संघर्ष को नई दिशा दी।तब भामाशाह की दानशीलता के प्रसंग आसपास के इलाकों में बड़े उत्साह के साथ सुने और सुनाए जाते थे।

भामाशाह अपनी दानवीरता के कारण इतिहास में अमर हो गए। वह बेमिसाल दानवीर एवं त्यागी पुरुष थे। आत्मसम्मान और त्याग की यही भावना उन्हें स्वदेश,धर्म और संस्कृति की रक्षा करने वाले देश-भक्त के रूप में शिखर पर स्थापित कर देती है। धन अर्पित करने वाले किसी भी दानदाता को दानवीर भामाशाह कहकर उसका स्मरण-वंदन किया जाता है। उनके लिए पंक्तियाँ कही गई हैं -

वह धन्य देश की माटी है,जिसमें भामा सा लाल पला।
उस दानवीर की यश गाथा को, मेट सका क्या काल भला?

आदर्श माँ जीजाबाई

12 जनवरी 1598 17 जून 1674

जीजाबाई उच्च कुल में जन्मीं असाधारण प्रतिभाशाली महिला थीं। जीजाबाई जाधव वंश की थीं और उनके पिता एक शक्तिशाली सामन्त थे। मराठा सम्राट छत्रपति शिवाजी राजे भोंसले की माता जीजाबाई का जन्म सिंदखेड़ नामक गाँव में हुआ था। यह स्थान वर्तमान में महाराष्ट्र के विदर्भ प्रांत में बुलढाणा जिले के मेहकर जनपद के अन्तर्गत आता है। उनके पिता का नाम श्री लखुजी जाधव तथा माता का नाम श्रीमती महालसा बाई था।

जीजाबाई का विवाह शाह जी के साथ कम उम्र में ही हो गया था। उन्होंने सदैव अपने पति का राजनीतिक कार्यों में साथ दिया। शाह जी ने तत्कालीन निजामशाही सल्तनत पर मराठा राज्य की स्थापना की कोशिश की थी। लेकिन वे मुगलों और आदिलशाही के संयुक्त बलों से हार गये थे। संधि के अनुसार उनको दक्षिण जाने के लिए मजबूर किया गया था। उस समय शिवाजी की आयु 14 साल थी, अतः वे मां के साथ ही रहे।

वीर माता जीजाबाई छत्रपति शिवाजी की माता होने के साथ-साथ उनकी मित्र, मार्गदर्शक और प्रेरणास्त्रोत भी थीं। उनका सारा जीवन साहस और त्याग से भरा हुआ था। उन्होंने जीवन भर कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों को झेलते हुए भी धैर्य नहीं खोया और अपने 'पुत्र 'शिवा' को वे संस्कार दिए, जिनके कारण वह आगे चलकर हिंदू समाज के संरक्षक 'छत्रपति शिवाजी महाराज' बने।

जीजाबाई बहुत ही चतुर और बुद्धिमानी महिला थीं। उन्होंने मराठा साम्राज्य के लिए अनेक ऐसे फैसले लिए जिनकी वजह से स्वराज स्थापित हुआ।

शिवाजी हमेशा भवानी माँ को पूजते थे और अपनी माँ के द्वारा मिली शिक्षा का निर्वहन करते हुए माँ को हमेशा पूजते रहे। इतिहास में लिखा है कि शिवाजी महाराज के पास एक ऐसी तलवार थी जिसका नाम 'भवानी' था यह भी माँ भवानी के वरदान से प्राप्त की गई थी।

जीजाबाई पहली ऐसी महिला थी जिन्होंने दक्षिण भारत में मराठा यानि हिंदुत्व की स्थापना में योगदान दिया था। उनकी मेहनत और उनके ही संस्कारों की वजह से शिवाजी ने मराठाओं के लिए हथियार उठाये और हिंदुत्व की स्थापना एक बार फिर से करने में सफलता हासिल की।

जीजाबाई की मृत्यु 17 जून 1674 ई. में हुई। शिवाजी ने इस समय तक मराठा साम्राज्य की स्थापना कर दी थी।

रानी लक्ष्मीबाई

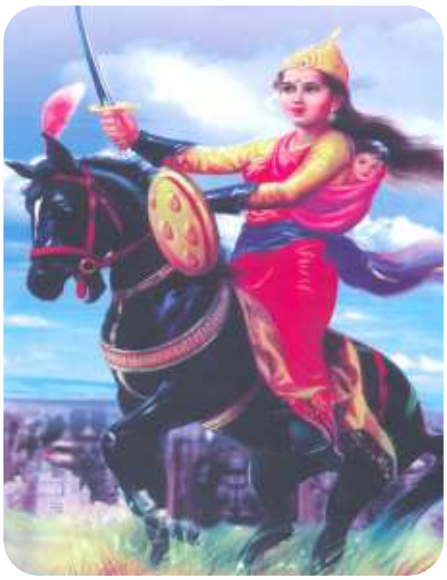

19 नवम्बर 1828 — 18 जून 1858

मराठा शासित झाँसी राज्य की रानी और 1857 की राज्य क्रान्ति की द्वितीय शहीद वीरांगना थीं। उन्होंने सिर्फ 29 वर्ष की उम्रमें अंग्रेज साम्राज्य की सेना से युद्ध किया और रणभूमि में वीर गति को प्राप्त हुईं। बताया जाता है कि सिर पर तलवार के वार से शहीद हुई थी लक्ष्मीबाई।

लक्ष्मीबाई का जन्म वाराणसी में हुआ था। उनके बचपन का नाम मणिकर्णिका था लेकिन प्यार से उन्हें मनु कहा जाता था। उनकी माँ का नाम श्रीमति भागीरथी बाई और पिता का नाम श्री मोरोपंत तांबे था। मोरोपंत एक मराठी थे और मराठा बाजीराव की सेवा में थे। माता भागीरथी बाई एक सुसंस्कृत, बुद्धिमान और धर्मनिष्ठ स्वभाव की महिला थीं। माँ की मृत्यु के बाद घर में मनु की देखभाल के लिये कोई नहीं था, इसलिए पिता मनु को अपने साथ पेशवाबाजी राव द्वितीय के दरबार में ले जाने लगे जहाँ चंचल और सुन्दर मनु को सब लोग प्यार से "छबीली" कह कर बुलाने लगे। मनु ने बचपन में शास्त्रों की शिक्षा के साथ शस्त्र की शिक्षा भी ग्रहण की। सन् 1842 में उनका विवाह झाँसी के मराठा शासक राजा गंगाधर राव नेवालकर के साथ हुआ और वे झाँसी की रानी बनीं। विवाह के बाद उनका नाम लक्ष्मीबाई रखा गया। सितंबर 1851 में रानी लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया परन्तु चार महीने की उम्र में ही उसकी मृत्यु हो गयी। सन् 1853 में राजा गंगाधर राव का स्वास्थ्य बहुत अधिक बिगड़ जाने पर उन्हें दत्तक पुत्र लेने की सलाह दी गयी। पुत्र गोद लेने के बाद 21 नवम्बर 1853 को राजा गंगाधर राव की मृत्यु हो गयी। दत्तक पुत्र का नाम दामोदर राव रखा गया।

ब्रितानी राज ने अपनी राज्य हड़पनीति के तहत बालक दामोदर राव के खिलाफ अदालत में मुकदमा दायर कर दिया। हालांकि मुक़द मे में बहुत बहस हुई, परन्तु इसे खारिज कर दिया गया। ब्रितानी अधिकारियों ने राज्य का ख़जाना जब्त कर लिया और उनके पति के कर्ज को रानी के सालाना खर्च में से काटने का फरमान जारी कर दिया। इसके परिणाम स्वरूप रानी को झाँसी का किला छोड़कर झाँसी के रानी महल में जाना पड़ा, पर रानी लक्ष्मीबाई ने हिम्मत नहीं हारी और हर हाल में झाँसी राज्य की रक्षा करने का निश्चय किया।

रानी लक्ष्मीबाई ने पुरुषों के वर्चस्व वाले काल में अपने राज्य की कमान संभालते हुए अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे। उन्होंने अपने जीते जी अंग्रेजों को झांसी पर कब्जा नहीं करने दिया। अंग्रेज भी उनकी वीरता के कायल थे। इस लड़ाई को लेकर ब्रिटिश जनरल ह्यूरोज ने टिप्पणी की थी कि रानी लक्ष्मीबाई अपनी सुंदरता, चालाकी और दृढ़ता के लिए तो उल्लेखनीय थीं ही, विद्रोही नेताओं में सबसे अधिक खतरनाक भी थीं। तात्या टोपे और रानी लक्ष्मीबाई की संयुक्त सेनाओं ने ग्वालियर के विद्रोही सैनिकों की मदद से ग्वालियर के एक किले पर कब्जा कर लिया। 18 जून, 1858 को ग्वालियर के पास कोटा की सराय में ब्रिटिश सेना से लड़ते-लड़ते रानी लक्ष्मीबाई ने वीरगति प्राप्त की।

कवियित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने रानीलक्ष्मी बाई की वीरता से प्रभावित होकर, उनके यश का गान करते हुए **झांसी की रानी** कविता की रचना की थी।

चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर

26 सितम्बर 1820 29 जुलाई 1891

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर उन्नीसवीं शताब्दी के बंगाल के प्रसिद्ध दार्शनिक, शिक्षाविद, समाज सुधारक, लेखक, अनुवादक, मुद्रक, प्रकाशक, उद्यमी और परोपकारी व्यक्ति थे।

सामाजिक क्रांति के अग्रदूत ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी का जन्म 26 सितंबर, 1820 को मेदिनीपुर में एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके बचपन का नाम ईश्वरचंद्र बंद्योपाध्याय था। संस्कृत भाषा और दर्शन में अगाधज्ञान होने के कारण विद्यार्थी जीवन में ही संस्कृत कॉलेज ने उन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि प्रदान की थी। इस के बाद से उनका नाम ईश्वरचंद्र विद्यासागर हो गया था। ईश्वरचंद्र को गरीबों और दलितों का संरक्षक माना जाता था।

आरम्भिक आर्थिक संकटों ने उन्हें कृपण प्रकृति (कंजूस) की अपेक्षा 'दयासागर' ही बनाया। विद्यार्थी जीवन में भी इन्होंने अनेक विद्यार्थियों की सहायता की। समर्थ होने पर बीसों निर्धन विद्यार्थियों, सैकड़ों निस्सहाय विधवाओं, तथा अनेकानेक व्यक्तियों को अर्थकष्ट से उबारा। वस्तुतः उच्चतम स्थानों में सम्मान पाकर भी उन्हें वास्तविक सुख निर्धनसेवा में ही मिला। शिक्षा के क्षेत्र में वे स्त्रीशिक्षा के प्रबल समर्थक थे। श्री बेथ्यून की सहायता से गर्ल्स स्कूल की स्थापना की जिसके संचालन का भार उनपर था। उन्होंने अपने ही व्यय से मेट्रोपोलिस कालेज की स्थापना की। साथ ही अनेक सहायताप्राप्त स्कूलों की भी स्थापना कराई। संस्कृत अध्ययन की सुगम प्रणाली निर्मित की। समाजसुधार उनका प्रिय क्षेत्र था, जिसमें उन्हें कट्टरपंथियों का तीव्र विरोध सहना पड़ा, प्राणभय तक आ बना। वे विधवाविवाह के प्रबल समर्थक थे। शास्त्रीय प्रमाणों से उन्होंने विधवाविवाह को बैध प्रमाणित किया। पुनर्विवाहित विधवाओं के पुत्रों को १८६५ के एक्ट द्वारा वैध घोषित करवाया। अपने पुत्र का विवाह विधवा से ही किया। संस्कृत कालेज में अब तक केवल ब्राह्मण और वैद्य ही विद्योपार्जन कर सकते थे, अपने प्रयत्नों से उन्होंने समस्त हिन्दुओं के लिए विद्याध्ययन के द्वार खुलवाए।

वह स्वतंत्रता सेनानी भी थे। इनके जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करना तथा उनसे प्रेरित हो कर तदनुसार जीवन जीना आज भी हमारे लिए प्रासंगिक है।

जन-जागरण समाज हित, जीवनभर गतिमान।
वन्दनीय हे! दार्शनिक, शिक्षाविद मतिमान॥
दीन-हीन का संरक्षण, दलितों का उद्धार।
भक्ति भाव उर में लिए, किया सभी से प्यार॥
ऐसे उत्तम व्यक्ति का, जग करता गुणगान।
दिव्यगुणों से अलंकृत, ईश्वरचन्द्र महान॥

महर्षि अरविंद घोष

15 अगस्त 1872 9 दिसंबर 1950

महर्षि अरविंद एक महान योगी और दार्शनिक थे। उनका जन्म 15 अगस्त 1872 को हुआ था। जब अरविंद घोष पांच साल के थे तो उन्हें पढ़ने के लिए दार्जिलिंग के लोरेटो कॉन्वेंट स्कूल में भेजा गया। अरविन्द के पिता डॉक्टर कृष्णधन घोष उन्हें उच्च शिक्षा दिला कर उच्च सरकारी पद दिलाना चाहते थे, अतएव मात्र 7 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने इन्हें इंग्लैण्ड भेज दिया। 18 वर्ष की उम्र में कैंब्रिज विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र की पढ़ाई पूरी की। इसके साथ ही उन्होंने अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, ग्रीक एवं इटैलियन भाषाओं में भी निपुणता प्राप्त की थी। अपने पिता की इच्छा का मान रखते हुए अरविंद घोष ने कैम्ब्रिज में रहते हुए न सिर्फ आईसीएस के लिए आवेदन किया बल्कि 1890 में भारतीय सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण भी कर ली। लेकिन उन्होंने अंग्रेजो की सेवा न करने का प्रण लिया।

स्वदेश आने पर उनके विचारों से प्रभावित होकर गायकवाड़ नरेश ने उन्हें बड़ौदा में अपने निजी सचिव के पद पर नियुक्त किया। वर्ष 1906 में बंग-भग आंदोलन के दौरान महर्षि ने बड़ौदा से कलकत्ता की तरफ कदम बढ़ाए और इसी दौरान उन्होंने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। यहीं से वे कोलकाता आये और फिर आजादी के आंदोलन में कूद पड़े। उनके भाई-बहिन ने उन्हें बाघाजतिन, जतिन बनर्जी और सुरेंद्रनाथ टैगोर जैसे क्रांतिकारियों से मिलवाया। इसके बाद वे 1902 में अहमदाबाद के कांग्रेस सत्र में श्री बाल गंगाधर तिलक से मिले और उनसे प्रभावित होकर स्वतंत्रता संघर्ष से जुड़ गए।

उन्होंने 'वंदेमातरम्' साप्ताहिक के सहसंपादन के रूप से अपना काम प्रारंभ किया। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करते हुए उनकी जोरदार आलोचना की। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ लिखने पर उन पर मुकदमा दर्ज किया गया, लेकिन वे छूट गए। हालांकि, इसके बाद बंगाल विभाजन के बाद हुए क्रांतिकारी आंदोलन से इनका नाम जोड़ा गया और 1908-09 में उन पर अलीपुर बमकांड मामले में राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया।

मुकदमा चलने के बाद उन्हें जेल में डाला गया और अलीपुर जेल में उन्हें रखा गया। यहां से उनका जीवन पूरी तरह बदला और वे यहां साधना और तप करने लगे। महर्षि यहां गीता पढ़ा करते और भगवान श्रीकृष्ण की आराधना करते। कहा जाता है कि उन्हें अलीपुर जेल में ही भगवान कृष्ण के दर्शन हुए।

जब वे जेल से बाहर आए तो आंदोलन से नहीं जुड़े और 1910 में पुड्डचेरी चले गए। यहां उन्होंने योग द्वारा सिद्धि प्राप्त की और अरविंद आश्रम ऑरोविले की स्थापना की। उन्होंने योग साधना पर कई मौलिक ग्रंथ लिखे जैसे, लेटर्स ऑन योगा, योग समन्वय, दिव्य जीवन, योगिक साधन आदि। उन्होंने कारावाहिनी (जेल कथा) नामक रचना भी की। 5 दिसंबर को उन्होंने इस नश्वर शरीर का त्याग किया। कहा जाता है कि निधन के बाद चार दिन तक उनके पार्थिव शरीर में दिव्य आभा बनी रही, जिसकी वजह से उनका अंतिम संस्कार नहीं किया गया और 9 दिसंबर 1950 को उन्हें आश्रम में ही समाधि दी गई।

श्री जिनके सानिध्य में, स्वयं अलंकृत होय।
अमर अनन्त अखण्ड शिव, दिव्य रूप वह होय।।
रक्षण पालन लोकहित, जिनका तन मन प्राण।
विष्णुरूप अरविन्द श्री, साधक सिद्ध सुजान।।
न्याय सत्यप्रिय ज्योतिमय, निर्बल के बल राम।
दयावान गुणधाम को, वन्दन नमन प्रणाम।

पावन स्मृति

पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा की और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्य समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया, अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं ऐसे उन सभी दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन अर्पित हैं।

जून मास

दिनांक	दिवस	महापुरूष का नाम/घटना
3 जून	जन्म-तिथि	बुंदेलखंड का शेर : छत्रसाल
8 जून	बलिदान-दिवस	बन्दा बैरागी का बलिदान
13 जून	जन्म–दिवस	शहीद सुखदेव
17 जून	बलिदान-दिवस	झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का अमर बलिदान
17जून	पुण्य-तिथि	शिवाजी की गुरु: माँ जीजाबाई
18 जून	इतिहास-स्मृति	हल्दीघाटी का महासमर
23 जून	बलिदान-दिवस	डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का बलिदान
26 जून	जन्म-तिथि	वन्देमातरम् के गायकः बंकिमचन्द्र चटर्जी
28 जून	जन्म-तिथि	अद्भुत दानी: भामाशाह

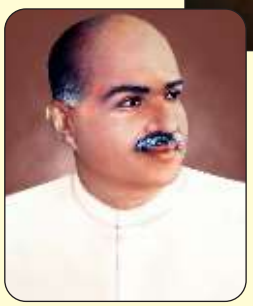

जुलाई मास

दिनांक	दिवस	महापुरूष का नाम/घटना
4 जुलाई	स्थापना-दिवस	आजाद हिन्द फौज की स्थापना
6 जुलाई	जन्म-दिवस	नारी जागरण की अग्रदूतः लक्ष्मीबाई केलकर
13 जुलाई	बलिदान-दिवस	बाजीप्रभु देशपाण्डे का बलिदान
20 जुलाई	पुण्य-तिथि	एक विस्मृत विप्लवीः बटुकेश्वर दत्त
29 जुलाई	पुण्य-तिथि	सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूतः ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
31 जुलाई	बलिदान-दिवस	जलियाँवालाबाग नरसंहार के प्रतिशोधीः ऊधम सिंह

अगस्त मास

दिनांक	दिवस	महापुरूष का नाम
3 अगस्त	जन्म –दिवस	राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त
8 अगस्त	राज्यभिषेक-दिवस	प्रतापी राजा कृष्णदेव राय
11 अगस्त	बलिदान-दिवस	अमर बलिदानी खुदीराम बोस
12 अगस्त	जन्म –दिवस	महान वैज्ञानिक : डॉ विक्रम साराभाई
13 अगस्त	जन्म-तिथि	मारवाड़ का रक्षक :वीर दुर्गादास राठौड़
15 अगस्त	जन्म –दिवस	स्वतन्त्रता के उद्घोषक : महर्षि अरविन्द
16 अगस्त	पुण्य-तिथि	स्वामी रामकृष्ण परमहंस की महासमाधि
17 अगस्त	बलिदान-दिवस	अमर बलिदानी मदनलाल धींगड़ा
18 अगस्त	जन्म-तिथि	अपराजेय नायक : पेशवा बाजीराव
23 अगस्त	पुण्य-तिथि	संगठन के मर्मज्ञ: श्री माधव राव देवड़े
29 अगस्त	जन्म-तिथि	हाकी के जादूगर : मेजर ध्यानचंद्र

विनम्र श्रद्धांजलि :

कीर्तिशेष भैया लाल

अत्यंत दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि अपने महामना शिक्षण संस्थान प्रकल्प के चौकीदार भैयालाल का निधन दिनांक 25 मई 2021 को रात्रि 9:00 बजे हो गया था। भैयालाल कोविड-19 बीमारी से संक्रमित थे और 8 मई को राममनोहर लोहिया चिकित्सालय में भर्ती हुए थे। भाऊराव देवरस सेवा न्यास परिवार के सभी सदस्य दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें तथा परिवार को असीम दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें।

।।ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।।

कीर्तिशेष सूरज कुमार

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के लखनऊ कार्यालय में स्वच्छता कर्मी 30 वर्षीय सुरज कुमार का 7 मई 2021 को कोरोना से निधन हो गया था। दिवंगत सूरज कुमार के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए भाऊराव देवरस सेवा न्यास परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें तथा शोक संतप्त परिवार में उनके माता-पिता भाई-बन्धु सभी को इस असीम दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

।।ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।।

अक्षय सेवा प्रकल्प

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित अक्षय सेवा प्रकल्प के माध्यम से दिल्ली में 3 अस्पतालों के निकट निर्धन लोगों के लिए दोपहर के भोजन का वितरण पिछले 4.5 वर्षों से हो रहा है | आवश्यकता को देखते हुए इसे और अधिक स्थानों पर प्रारम्भ करने के लिए न्यास के कार्यकर्ता प्रयत्नशील हैं | आशा है कि समाज के समर्थ बंधुओं के सहयोग से यह कार्य शीघ्र करने में न्यास समर्थ होगा | भोजन वितरण के जून जुलाई के कुछ चित्र संलग्न हैं |

समर्थ भारत प्रकल्प - जुलाई की गतिविधियाँ

समर्थ भारत - मालवीय नगर प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन समारोह

दिल्ली प्रान्त के दक्षिणी विभाग में सेवा भारती केंद्र **मालवीय नगर** में **समर्थ भारत प्रशिक्षण केंद्र** का **दिनांक 8 जुलाई 2021** को **उद्घाटन** हुआ। इस केंद्र में हेयर स्टाइलिस्ट और ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण दिया जायेगा। प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन दिल्ली प्रान्त के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत कार्यवाह **माननीय भारत भूषण जी** ने किया।

हवन - टैंकरोड प्रशिक्षण केंद्र

दिनांक - 18 जुलाई 2021, को सुबह 10 बजे टैंक रोड प्रशिक्षण में हवन का कार्यक्रम किया गया जिसमें केंद्र की पूरी व्यवस्था टोली उपस्थित रही |

समर्थ भारत कोंडली नगर प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन समारोह

दिल्ली प्रान्त के पूर्वी विभाग के **कोंडली** नगर में **समर्थ भारत प्रशिक्षण केंद्र** का **दिनांक 28 जुलाई 2021** को उद्घाटन हुआ। इस केंद्र में हेयर स्टाइलिस्ट और ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण दिया जायेगा। प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन दिल्ली प्रान्त के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत कार्यवाह **माननीय भारत भूषण जी** ने किया।

विभिन्न विश्राम सदन में अप्रैल - 2021 की उपस्थिति

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम, लखनऊ				KGMU, लखन			
		अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
1	जम्मू कश्मीर								
2	हिमाचल प्रदेश								
3	पंजाब								
4	हरियाणा								
5	दिल्ली	2		4	3	3		3	5
6	उत्तराखंड	6		12	5				
7	उत्तर प्रदेश	779	346	1329	1919	116		245	724
8	बिहार	368	64	479	740	16		13	23
9	झारखण्ड	14	3	25	37				
10	सिक्किम								
11	नागालैंड								
12	असम								
13	मणिपुर /मिजोरम								
14	अरुणाचल प्रदेश								
15	त्रिपुरा								
16	मेघालय								
17	प. बंगाल	3		4					
18	ओडिशा/अंदमान	6			12				
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना								
20	तमिलनाडु /पुदुच्चेरी								
21	कर्नाटक								
22	केरल								
23	महाराष्ट्र /गोवा								
24	मध्य प्रदेश	28	13	41	72				3
25	छत्तीसगढ़								
26	गुजरात								
27	राजस्थान		7						
28	अन्य	20		3	6	3			3
	पड़ोसी देश								
29	नेपाल	6		4	1				
30	बांग्लादेश								
31	अन्य देश								
	योग (इस मास)	**1232**	**433**	**1901**	**2795**	**138**	**0**	**264**	**755**
	योग - अप्रैल 2021 से	**1232**	**1665**	**3566**	**6361**	**138**	**138**	**402**	**1157**

विभिन्न विश्राम सदन में अप्रैल - 2021 की उपस्थिति

क्र.स.	राज्य/देश	विश्राम सदन, दिल्ली				IGIMS, पटना			
		अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
1	जम्मू कश्मीर								
2	हिमाचल प्रदेश	2			4				
3	पंजाब								
4	हरियाणा	3		2					
5	दिल्ली	15	13	8	4				
6	उत्तराखंड	3		5	13				
7	उत्तर प्रदेश	77	47	75	149				2
8	बिहार	59	19	12	101	631			1241
9	झारखण्ड	12		4	8	4			5
10	सिक्किम								
11	नागालैंड								
12	असम	3	6		4				
13	मणिपुर /मिजोरम								
14	अरुणाचल प्रदेश								
15	त्रिपुरा								
16	मेघालय								
17	प. बंगाल	9	5	5	5				
18	ओडिशा/अंदमान		3						
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना	3	2	2					
20	तमिलनाडु /पुदुच्चेरी								
21	कर्नाटक								
22	केरल								
23	महाराष्ट्र /गोवा								
24	मध्य प्रदेश	9			23				
25	छत्तीसगढ़	2							1
26	गुजरात								
27	राजस्थान					1			
28	अन्य	4		20	30				
	पड़ोसी देश								
29	नेपाल	8							14
30	बांग्लादेश	3	9	1					
31	अन्य देश								
	योग (इस मास)	**212**	**104**	**133**	**342**	**636**	**0**	**0**	**1263**
	योग - अप्रैल 2021 से	**212**	**316**	**449**	**791**	**636**	**636**	**636**	**1899**

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

लखनऊ और उसके आस पास दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं का विवरण

	मई	जून	जुलाई
सेवा बस्ती में स्वास्थ्य केन्द्र (सेवा समर्पण संस्थान – बिन्दौवा)	LOCKDOWN	--	--
अम्बेदकर नगर लखनऊ		--	--
माधवरव देवड़े स्मृति रूग्न सेवा केन्द्र, निराला नगर			
एलोपेथिक		--	--
होम्योपैथिक		137	258
रूग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम – होम्योपैथ		180	305
कुल लाभान्वित रोगी		317	563

आलोकः माह 18 अप्रैल और मई में लाकडाउन तथा जून जुलाई में चिकित्सक उपलब्ध न होने के कारण केन्द्रों पर चिकित्सीय सेवा प्रभावित रही।

देवड़े नेत्र चिकित्सालय

मई, जून और जुलाई 2021 में दी गई सेवाएँ

	मई	जून	जुलाई
नेत्र परिक्षण	LOCKDOWN	150	302
चश्मा वितरण		98	209
मोतियाबिंद ऑपरेशन		--	--
पैथोलॉजी		--	05
कुल लाभान्वित रोगी		150	302

आलोक : नेत्र एवं पैथोलॉजी जांच केवल 20 रूपए के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है।

*माह मई में कई सेवाएँ लाकडाउन के कारण प्रभावित रहीं।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प

प्रकल्प का नाम	सम्पर्क सूत्र	दूरभाष
स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री ओ.पी. श्रीवास्तव	9839785395
माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	श्रीमती अर्चना दीक्षित	9821483861
सामाजिक विज्ञान एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
विश्राम सदन के.जी.एम.यू. लखनऊ	श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल	9415003111
देवड़े नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री राजेश	9793120738
सेवा संवाद (मासिक) लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक) लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
एम्स पावर ग्रिड विश्राम सदन, दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र	श्री गौरव गर्ग	9918532007
विश्राम सदन, IGIMS पटना (बिहार)	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457